- राजनीतिक नेता द्वारा एक धार्मिक समूह के समर्थन को बढ़ाने के लिए भाषण देना।
- समाज के रूढ़िवादी और विभाजनकारी तत्वों के लिए वित्तीय और वैचारिक समर्थन।
- जनसांख्यिकी कारक देश के एक निश्चित हिस्से में जनसांख्यिकी परिवर्तनों ने असम, पश्चिम बंगाल और कश्मीर घाटी में सांप्रदायिक भावनाओं को उकसाने का एक अवसर तैयार किया।
- अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव पैन-इस्लामिक आंदोलन भी देश में भारत विरोधी जिहाद की भावनाओं को बढ़ा रहे हैं।
- देश में आईएसआई कारक द्वारा भी सांप्रदायिक भावनाओं को इन कट्टरपंथी समूहों द्वारा बढ़ावा दिया जाता है जो धार्मिक मूल सिद्धांतों के आधार पर देश का विभाजन करने की कोशिश करते हैं।
- सोशल मीडिया कारक: सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर रूढ़िवादी समूहों की उपस्थिति अफवाहें, विघटन, घृणा फैलाने वाली भाषण, और अंधभक्ति हिंसा फैलती है।
- उचित कार्रवाई का अभाव: सजा प्रणाली वहां तक नहीं पहुंच पाती है जहाँ मुसीबत निर्माता के लिए अधिक अवसर प्रदान होता है।

दंगों के तत्काल कारण

- लैंगिक अपराध → एक धार्मिक समुदाय के सदस्यों ने बलात्कार यौन उत्पीड़न जैसे अन्य सामुदायिक अपराधों की महिलाओं के खिलाफ लैंगिक हिंसा का आरोप लगाया और लव जिहाद जैसे अन्य मुद्दे भी सामाजिक ताने-बाने को बिगाड़ रहे थे।
- धार्मिक त्योहार → त्योहार के उत्सव के दौरान होली या मुहर्रम के उत्सव पर दो समुदायों के बीच सांप्रदायिक तनाव और विवाद उत्पन्न होते हैं।
- भूमि विवाद→ देश के विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच भूमि के स्वामित्व को लेकर विवाद ।
- शासन के मुद्दे→ **पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न आयोगों ने निम्नलिखित कमियों का पता लगाया था :**
  - अप्रभावी संघर्ष संकल्प तंत्र।
  - एक अधिकारी की समयबद्ध कार्रवाई और जवाबदेही का अभाव
  - स्थिति के बारे में खुफिया जानकारी का अभाव।
  - सांप्रदायिक हिंसा के मामले में मानक संचालन प्रक्रिया (*SoP*) का अभाव।
  - आपराधिक मामलों में विशेषज्ञता का अभाव प्रशिक्षण सांप्रदायिक तनाव या सांप्रदायिक हिंसा से निपटने के लिए कर्मियों की कमी।
- प्रशासनिक मुद्दे → सांप्रदायिक हिंसा के शुरुआती चरणों में पुलिस और प्रशासन की धीमी प्रतिक्रिया। कभी-कभी पुलिस और प्रशासन पक्षपातपूर्ण तरीके से काम करते हैं। नेतृत्व की विफलता और सामान्य जनता के साथ प्रशासन की कड़ी भी कमजोर है।
- **हिंसा-पश्चात प्रबंधन से संबंधित कमियाँ →**
  - पुनर्वास के मुद्दे जो अक्सर पलती हुई आक्रोश और क्रोध की उपेक्षा करते हैं।
  - पुनर्वास की प्रक्रिया में शामिल अधिकारियों की जवाबदेही में कमी।

गलत खबरें और सांप्रदायिक हिंसा :

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर फर्जी खबरों का सर्कुलेशन सामाजिक शांति को भंग करता है और सरकार के प्रति एक समुदाय की शत्रुता भी पैदा करता है। नकली वीडियो और इसका प्रचलन कभी-कभी मॉब लिंचिंग और हिंसा का कारण बनता है।

मॉब लिंचिंग: